

# माध्यमिक स्तर पर हिन्दी भाषा में क्रिया के प्रयोग में मल्टीमीडिया उपागम का अधिगम स्तर पर प्रभाव का अध्ययन” (भोपाल जिले के संदर्भ में)

ज्योति पाल<sup>1</sup>, डॉ. संस्मृति मिश्रा<sup>2</sup>

<sup>1</sup>शोधार्थी, रविन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.) भारत.

<sup>2</sup>वरिष्ठ प्रबंधक, व्यवहार विज्ञान विभाग, क्रिस्प, भोपाल (म.प्र.) भारत.

## सारांश

आज हिन्दी भाषा शिक्षण की महती आवश्यकता व महत्वपूर्ण भूमिका के कारण शिक्षकों पर दिन-प्रति-दिन यह दबाव पड़ रहा है कि उन्हें परम्परागत विधि त्याग कर नवीन विकसित विधियों को अपनाना चाहिए, किन्तु इन नवीन विकसित विधियों को सही व वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत अधिगम में वृद्धि करना भी आवश्यक है। शिक्षण अधिगम की इन्हीं अवधारणाओं को ध्यान में रखकर यह शोधकार्य किया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य में भोपाल जिले के 5 सी.बी.एस.ई. व 5 म.प्र. बोर्ड के विद्यालयों से कक्षा 8 के 20 छात्र व 20 छात्राओं का चयन किया गया।

**मुख्यबिन्दु-** मल्टीमीडिया उपागम, अधिगम स्तर

## I प्रस्तावना

भाषा शिक्षण का अर्थ है लिपि, वर्तनी, सुलेख व व्याकरण का ज्ञान देना, शब्द भण्डार की वृद्धि करना, मुहावरों, सूचितयों व लोकोक्तियों की समझ परिपक्व करना, रस, छन्द, अलंकार का बोध करना, कविता से रसानुभूति ग्रहण करना, गद्य का आदर्श वाचन और पठित अंश से अर्थ ग्रहण करना, अपने विचारों का निर्माण करना एवं प्रसंगानुसार उन्हें व्यक्त करना। अपनी लिखित व मौखिक अभिव्यक्ति को श्रेष्ठ बनाना। उक्त सभी विषयों का बोध व दक्षता प्रदर्शित करना ही भाषा शिक्षण का उद्देश्य है। वास्तव में भाषा शिक्षण के इन सभी उद्देश्यों की प्राप्ति सहज भाषा कार्य नहीं है। शोध के आंकड़ों से स्पष्ट है परंपरागत विधि से अधिगम स्तर की प्रभावशीलता में कोई वृद्धि नहीं हुई। वास्तव में शोध के आंकड़े बताते माध्यमिक स्तर में व्याकरणगत वर्तनीगत अशुद्धियों, उच्चारण संबंधी त्रुटियों में निरंतर वृद्धि हो रही है। अतः यह स्पष्ट है कि इन अशुद्धियों त्रुटियों को सुधारने में परंपरागत विधि से शिक्षण कारगर नहीं हो पा रहा है।

अतः परंपरागत विधि से से हटकर अपरंपरागत शिक्षण विधियों को प्रयोग में लाना होगा। आजकल प्रोद्यौगिकी के बढ़ते चलन के कारण शिक्षण विधियां भी उससे अछूती नहीं हैं। इसी प्रोद्यौगिकी का नवीन उपागम है मल्टीमीडिया। प्रस्तुत शोध पत्र मल्टीमीडिया आधारित माध्यमिक स्तर पर हिन्दी शिक्षण करने पर अधिगम स्तर पर पड़ने वाली प्रभावशीलता को समझने का विनम्र प्रयास है।

मल्टीमीडिया एक बहुआयामी शिक्षण की व्यवस्था है। भारत की शिक्षा प्रणाली में हिन्दी भाषा में मल्टीमीडिया के प्रयोग से न केवल शिक्षा के स्तर को उच्च किया जा सकता है, वरन् ‘करके सीखने की क्षमता’ का विकास सहज ही किया जा सकता है। मल्टीमीडिया में शिक्षण के दौरान छात्र सजग रहता है क्योंकि लागतार फीडबैक से सीखने की क्षमता का आंकलन तुरंत संभव हो जाता है। उपलब्ध शोध साहित्य के अनुशीलन से यह तथ्य सामने आए हैं कि हिन्दी भाषा में सर्वेक्षण शोध व शिक्षण विधियों पर शोध कार्य सम्पन्न हुए हैं, परन्तु अंग्रेजी भाषा की तुलना में हिन्दी भाषा में इस प्रकार के शोध कम संख्या में हुए हैं। हिन्दी भाषा अधिगम को लेकर किए गए शोध

अध्ययनों में अधिकतर शोध भाषा के सभी कौशलों पर बल नहीं देते हैं। साथ ही माध्यमिक स्तर के हिन्दी भाषा में अधिगम में मल्टीमीडिया उपागम के प्रभाव संबंधी कारणों को लेकर किए जाने वाले शोध की संख्या तो नगण्य है। निर्धारित दक्षताएँ अथवा कौशल जिन्हें भाषा अधिगम स्तर कहा जाता है, को प्राप्त करने में वे बहुत ही पीछे हैं, भाषा अधिगम बहुआयामी और सबसे महत्वपूर्ण सम्प्रत्यय है।

## II साहित्य की समीक्षा

कुमार (2005) द्वारा किए गए शोध में भी दृष्टिगत हुआ था। उनके द्वारा किए गए शोध में यह भी पाया गया जिन विद्यार्थियों को कम्प्यूटर का ज्ञान है उन विद्यार्थियों की हिन्दी व्याकरण व भाषा में उपलब्धि अधिक पाई गई। जिंग लई (2010) ने कॉलेज के विद्यार्थियों की अंग्रेजी विषय में मल्टीमीडिया के प्रभाव का अध्ययन किया तथा पाया कि विद्यार्थियों की उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ा, किन्तु उनकी अधिगम के प्रति रूप में तीव्र वृद्धि अवश्य पाई गई। इसके विपरीत शोधार्थी द्वारा माध्यमिक कक्षा के विद्यार्थियों पर मल्टीमीडिया के प्रभाव का जो अध्ययन किया, उसमें विद्यार्थियों की उपलब्धि सार्थक रूप से उच्च पाई गई।

मन्था श्रीनिवास (2011) ने राष्ट्रीय संस्कृत विद्यालय हेतु किए गए शोध में पाया कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की जब कम्प्यूटर द्वारा संस्कृत विषय का अध्ययन कराया गया तो उनकी उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया। यही निष्कर्ष शोधार्थी के अध्ययन में माध्यमिक कक्षा के विद्यार्थियों हेतु प्राप्त हुआ अर्थात् जब विद्यार्थियों को मल्टीमीडिया द्वारा शिक्षित किया गया तो उनकी हिन्दी भाषा व व्याकरण की उपलब्धि में पर्याप्त सुधार देखा गया।

## III अध्ययन के उद्देश्य

शोधार्थी ने समस्या को दृष्टिगत रखते हुए अग्रलिखित उद्देश्य निर्धारित किए हैं:-

हिन्दी भाषा व व्याकरण में अधिगम स्तर की वृद्धि के लिए नवीन शिक्षण विधियों के चयन की विवेचना करना।

हिन्दी भाषा में क्रिया के ज्ञान में मल्टीमीडिया उपागम की प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

#### IV अध्ययन की परिकल्पना

क्रिया के ज्ञान की उपलब्धि में प्रयोगात्मक व नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

#### V अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध कार्य में समस्या के अध्ययन एवं प्रदत्तों के सकलन उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधार्थी ने प्रयोगात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया है। माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं के हिन्दी भाषा में उपलब्धि परीक्षण करने के लिए शोधकर्ता द्वारा एक प्रश्नावली का निर्माण किया गया, इस प्रश्नावली में हिन्दी भाषा व्याकरण के क्रिया, के 25 प्रश्नों को सम्मिलित किया गया।

#### VI प्रदत्तों के विश्लेषण

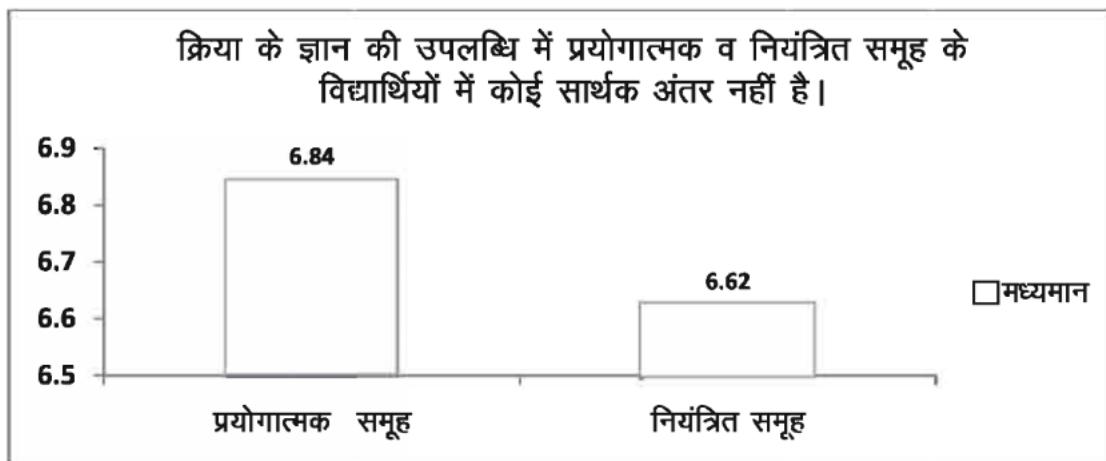
शोध अध्ययन में एकत्रित प्रदत्तों के विश्लेषण से निम्न परिणाम प्राप्त हुए—

**भ1. क्रिया के ज्ञान की उपलब्धि में प्रयोगात्मक व नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।**

(i) सारणी – 1.1

क्र.	समूह	विद्यार्थियों की संख्या	स्वतंत्रता का अंश (df)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	'ज' मान	सार्थकता
1	प्रयोगात्मक समूह	200	398	6.84	1.378	1.886	परिकल्पना अस्वीकृत सार्थक अंतर है
2	नियंत्रित समूह	200		6.62	1.343		

(ii) आरेख – 1.1



सारणी 1.1 एवं आरेख क्र. 1.1 से स्पष्ट है कि स्वतंत्रता के अंश 398 के लिए प्रयोगात्मक समूह का मध्यमान 6.84 तथा नियंत्रित समूह का मध्यमान 6.62 है। इसी प्रकार प्रयोगात्मक समूह का मानक विचलन गणना करने पर 398 स्वतंत्रता के अंश के लिए 0.5 सार्थकता स्तर पर शज़ का मान 1.886 प्राप्त हुआ जो शज़ के सारणी मान

## VIII परिणाम

**(क) शोध का परिणाम**—एकत्रित प्रदत्तों के सारणीयन के पश्चात् निर्धारित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया, प्रत्येक परिकल्पना के परीक्षण हेतु समूहों (नियंत्रित एवं प्रयोगात्मक) का मध्यमान, मानक विचलन तथा 0.5 सार्थकता स्तर पर शज़ का मान ज्ञात किया गया। इस प्रकार परिकल्पना के विश्लेषण से निम्न परिणाम प्राप्त किए।

- जिन विद्यार्थियों को मल्टीमीडिया द्वारा शिक्षण दिया गया, उनकी हिन्दी भाषा में उपलब्धि परम्परागत विधि द्वारा पढ़ाए जाने वाले विद्यार्थियों की तुलना में उच्च पाइ गई।
- ऐसे विद्यार्थियों जिन्हें परम्परागत विधि से क्रिया का ज्ञान प्रदान किया तथा जिन विद्यार्थियों को मल्टीमीडिया द्वारा क्रिया का ज्ञान प्रदान किया गया, दोनों समूहों में से उपलब्धि का स्तर मल्टीमीडिया द्वारा पढ़ाए गए विद्यार्थियों का अधिक रहा।
- शोधार्थी द्वारा किए गए शोध के परिणामों में यह पाया गया, कि लिंग के आधार पर हिन्दी भाषा और व्याकरण की उपलब्धि में नियंत्रित समूह व प्रायोगिक समूह के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। यही निष्कर्ष

## IX उपसंहार

पूर्व शोधार्थियों द्वारा किए गए अध्ययनों से प्राप्त परिणामों की शोधार्थी द्वारा प्राप्त परिणामों से मिलान करने पर यह दृष्टिगत होता है कि मल्टीमीडिया (इंटरनेट, कम्प्यूटर तथा अन्य इलेक्ट्रॉनिक माध्यम) द्वारा विद्यार्थियों को शिक्षित करने पर उनकी सभी विषयों में उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है, प्रायः विद्यार्थियों की उपलब्धि परम्परागत शिक्षण विधियों से उच्च पाइ गई। इसी प्रकार शिक्षकों का भी कम्प्यूटर, इन्टरनेट, मल्टीमीडिया आदि के प्रति सकारात्मक रुझान पाया गया।

प्रस्तुत शोध 'माध्यमिक स्तर पर हिन्दी भाषा शिक्षण में मल्टीमीडिया उपागम का अधिगम स्तर पर प्रभाव का अध्ययन' करने हेतु किया गया शोध के उपरान्त प्राप्त परिणामों को यदि संक्षेप में व्यवत् किया जाए तो हम यह कह सकते हैं कि यदि विभिन्न मल्टीमीडिया प्रविधियों द्वारा विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा व व्याकरण की शिक्षा प्रदान की जाए तो उनका उपलब्धि स्तर अथवा अधिगम स्तर उच्च हो जाता है।

1.64 से अधिक है। अतः यह परिकल्पना क्रिया के ज्ञान की उपलब्धि में प्रयोगात्मक व नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है, अस्वीकृत की जाती है। अर्थात् यह स्पष्ट है कि मल्टीमीडिया उपागम द्वारा प्रयोगात्मक समूह की क्रिया के ज्ञान की उपलब्धि नियंत्रित समूह की उपलब्धि से अधिक पाइ गई।

## X शैक्षिक निहितार्थ (भावी परिणाम)

अतः प्रस्तुत शोध के विभिन्न शैक्षिक निहितार्थों को शोधार्थी निम्न बिन्दुओं द्वारा प्रस्तुत कर रहा है—

(क) शोध के परिणामों को दृष्टिगत रखते हुए यदि विद्यालय प्रशासन चाहे तो अपने विद्यालय में कम्प्यूटर तथा एल.ई.डी. प्रोजेक्टर की व्यवस्था कर न केवल हिन्दी भाषा वरन् अन्य विषयों का शिक्षण सभी कक्षा के विद्यार्थियों को करा सकते हैं, जिससे विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर निश्चित रूप से सुधार होगा।

(ख) मल्टीमीडिया उपकरणों द्वारा शिक्षण करने पर विद्यार्थियों को नीरस परम्परागत शिक्षण विधियों से मुक्ति मिलेगी तथा वे रुचिकर तरीके से अधिगम कर सकेंगे।

(ग) मल्टीमीडिया उपकरणों द्वारा शिक्षण करने पर कक्षा में पाए जाने वाले सभी स्तरों के विद्यार्थी जैसे प्रतिभाशाली, सामान्य, पिछड़े, विशिष्ट समान से विषय का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

## XI अध्ययन की परिसीमाएँ

(क) प्रस्तुत शोध म.प्र. के भोपाल जिले के शहरी क्षेत्रों तक ही सीमित है।

(ख) प्रस्तुत शोध भोपाल शहर के केवल 10 निजी विद्यालयों तक ही सीमित है।

(ग) प्रस्तुत शोध कार्य में 5 सी.बी.एस.ई. विद्यालय व 5 म.प्र. बोर्ड के विद्यालयों का चयन किया गया।

(घ) प्रत्येक विद्यालय के केवल कक्षा 8 के विद्यार्थियों का चयन किया गया।

(च) प्रत्येक विद्यालय से कक्षा 8 के 20 छात्र व 20 छात्राओं का चयन किया गया।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

- [1] तिवारी डॉ. भोलानाथ, "सम्यक भाषा हिन्दी" प्रभात प्रकाशन दिल्ली—6 प्रथम संस्करण, 1957
- [2] "नीप एच्च डमीतवजताए चट्टण "शैक्षिक अनुसंधान के मूलतत्त्व", विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा—2, 1971

- [3] बुच एम.वी, “पॉचवा सर्व ऑफ रिसर्च एन एज्युकेशन”, द्वितीय संस्करण, एन.सी.ई.आर.टी, नई दिल्ली, 1972
- [4] पाठक पी.डी., “भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें”, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1972
- [5] वात्सायन सच्चिदानन्द, “आधुनिक हिन्दी साहित्य”, राजपाल एण्ड सन्स कश्मीरी गेट, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1976
- [6] नायर, पी.आर, मैसूर टीचर, एटिचुड्स स्केल्स, डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन, मैसूर यूनिवर्सिटी, 1977
- [7] बघेगा गिजु भाई, “प्राथमिक विद्यालय में भाषा शिक्षा”, संस्कृत साहित्य, दिल्ली, 2000
- [8] पाण्डेय, डॉ. राम प्रकाश, “उच्चतर माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों में सहयोग मूल्य विकास हेतु मूल्य मल्टीमीडिया के संदर्भ में पाठ्यक्रम सहगामी ओं की प्रभाविता का अध्ययन”, शोध समीक्षा और मूल्यांकन, अगस्त - 2009, वोल्यूम- ।।, इश्यू-7, प्रकाशक डॉ. कृष्णवीर सिंह द्वारा आर.आर. प्रिन्टर्स, जयपुर।
- [9] रदरफोर्ड व होल्ड स्टोक (1995) “कम्प्यूटर तकनीकी के प्रति उच्च अभिवृत्ति का अध्ययन”
- [10] कोसर्सटटन व कालेले मनेने (1996) “छात्रों व छात्राओं के कम्प्यूटर के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन”
- [11] नीरा चेतनलाल (1998) “व्याख्यान विधि व मल्टीमीडिया साधनों के सम्मिश्रण का अधिगम पर प्रभाव संबंधी तुलनात्मक अध्ययन”
- [12] अग्रवाल कुसुम (1999) “शैक्षिक रूप से असफल किशोरों के माता-पिता की अभिवृत्ति एवं उनकी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि पर अध्ययन”
- [13] खेडा कौशल किशोर (2000) ‘मध्यप्रदेश राज्य के प्राथमिक विद्यालयों के ढाँचा में छात्र उपलब्धियों के साथ अधिगम तथ्यों का अध्ययन”
- [14] मित्रा स्टीफेन्सी मीयर (2000) “इन्टरनेट आधारित अधिगम सामग्री का तथा पाठ्यपुस्तकों का प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों के कम्प्यूटर तकनीकी के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन”
- [15] इर्विन (2001) “इन्टरनेट आधारित अधिगम के अभिवृत्ति के सहसम्बन्ध कारकों का अध्ययन”
- [16] सेठी उर्मि व कौर विरेन्द्र (2014) “10वीं कक्षा के छात्रों में विज्ञान एवं विद्यालय वातावरण में रुचि का विज्ञान में उपलब्धि के लिए सहसंबंध” एक अध्ययन
- [17] अनिता (2002) “को-ऑपरेटिव लर्निंग एण्ड मल्टीमीडिया का हाई स्कूल छात्रों के लेखन पर प्रभाव का अध्ययन”
- [18] राव वी.के. (2003) “वर्ल्ड वाइड वेब के शिक्षा पर प्रभाव का अध्ययन”
- [19] नीओ एण्ड नीओ (2001) “इनोवेटीव टीचिंग यूजिंग मल्टीमीडिया इन ए प्रॉब्लम बेर्स्ट लर्निंग इन्वायरोमेंट” एक अध्ययन
- [20] कुमार (2005) “कक्षा नौवीं के छात्रों की व्याकरण संबंधी उपलब्धियों का अध्ययन”
- [21] बेहरा के. और नायक, बी. (2005) “इफैक्ट ऑफ एविटविटी-बेर्स्ड टीचिंग-लर्निंग प्रॉसेस एण्ड कॉम्पीटेन्सी-बेर्स्ड टीएलएम ऑन द अचीवमेण्ट ऑफ द लर्नर्स” एक प्रयोगात्मक अध्ययन।